दूध वाला

(Doodh Wala)

Dr. Waseem Siddiqi
डा0 वसीम सिद्दीकी
10/8Th Road North
Ahmadi.61008
Kuwait

जनाबे आली बहुत से अहले क़लम हज़रात ने बादशाहों, शहज़ादों, शहज़ादियों, सिपाहसालारों, परियों, भूत, चुड़ैल, नेताओं, या शोअरा या उदबा या खुद अपने ऊपर लिखा होगा लेकिन किसी ने दूध वाले पर न लिखा होगा। उन्हें बड़े आदमियों पर लिखने से फ़ुरसत मिले तो वह दूध वाले पर लिखें अब आप लोग सोचने लगे होंगे कि यह इतने बड़े दूध वाले के हमदर्द कहाँ से पैदा हो गये जनाब दूध वाले का हमदर्द भला कौन होगा मैं खुद ही एक दूध वाला हूँ और जब मैंने समझ लिया कि कोई भी क़लम मेरे दुख दर्द को बयान नहीं करेगा तो मैंने शुरफ़ा की ज़बान में अपनी सर गुज़श्त की कोशिश की है।

अब आप सुनिये मेरी दास्ताने ग़म सबसे ज़्यादा शिकायत मुझे सारी दुनिया से है कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझे ईमानदार समझे हर शख़्स मुझे बेईमान समझने पर तुला हुआ है इस तरह के फ़क़रे सुनते सुनते तो मेरे कान पक गये हैं।कि अरे भाई दूध वाले सच बताओ दूध में पानी मिलाते हो या पानी में दूध–यह लोग जैसे पानी की अहमियत को कुछ समझते ही नहीं कि पानी इन्सान की ज़िन्दगी के लिये कितना ज़रूरी है एक साहब ने तो हद कर दी कहने लगे देखो दूध वाले हमारे यहाँ अमरीका से कुछ रिश्तेदार आये हुये हैं वह ज़रा से ज़रासीम भी बरदाश्त नहीं कर पाते इसलिये तुम दूध में पानी जितना भी मिलाओ लेकिन खुदा के लिये दूध में साफ़ पानी मिलाओ अब उन्हें कौन बताये कि देहात में साफ़ पानी बड़ी मुश्किल से मिलता है वैसे तालाब का पानी क्या साफ़ नहीं होता।

एक तो हम दूध वालों के साथ तराजू बाँट का कोई चक्कर नहीं होता हम लोगों की नाप होती है और उसे भरकर देना ही पड़ता है तराजू से तौलने वाले कितने फ़ायदे में रहते हैं। अब मुश्किल यह है कि दूध में पानी न मिलाऊँ नाप पूरी भर कर दूँ और ऊपर से थोड़ा सा धुलवा यानी (फाल्तू दूध) भी डालो बहुत से लोग दूध तो लेते हैं पाव भर और इतना ही धुलवा लेने के चक्कर में रहते हैं।

एक बार क्या हुआ एक साहब को दूध दे रहा था, ग़लती से पूरा दूध उंडेल नहीं पाया और थोड़ा सा दूध नपने में रह गया अरे साहब लगे गुस्सा करने कि दूध वाले तुम वाक़ई में बेईमान हो चलो पानी मिलाते हो कोई बात नहीं अब तो दूध में भी डंडी मारने लगे हो। अब कुछ नही तो तुमने सौ ग्राम दूध नपने में बचा लिया अरे मियाँ अल्लाह के यहाँ नहीं जाना है अब उनसे कौन कहता कि अल्लाह के यहाँ सिर्फ़ मुझे ही जाना है वह तो हमेशा ज़िन्दा रहेंगे और हाँ एक दिन तो वह हम से खुद ही कह रहे थे कि पछली बार जब वह दुबई से आये थे तो ट्रान्सिस्टर में चार घड़ियाँ छुपा कर लाये थे यह जैसे बहुत ईमान दारी का काम है अब जनाब उन साहब का यह हाल है कि दूध लेते वक़्त जब तक हम अपने नपने को 90 डिग्री पर झुका नहीं लेते उन्हें चैन नहीं आता। और उसके बाद भी नपने को झाँक कर देखते हैं उनका बस नहीं चलता कि एक आध बूँद जो नपने में रह गयी है झिटक कर उसे भी गिरा लें।

ऐसे भाँत–भाँत के लोगों से साबक़ा पड़ता है कि कभी–कभी तो जी चाहता है कि दूध के सारे डिब्बे नदी में फेंक कर किसी भैंस पर बैठ कर जंगल में निकल जाऊँ कम अज़कम ऐसे लोगों से वास्ता तो न पड़ेगा।

एक साहिबा का वाक़ेआ सुनिये जब भी उनके दरवाज़े पर दूध देने जाता हूँ उनके साथ–साथ एक बिल्ली भी वारिद होती है पहले तो खूब अच्छी तरह धुलवा समेत दूध लेती है और उसके बाद कहती है अरे दूध वाले यह बिल्ली की दूध की कटोरी है ज़रा बिल्ली के लिये इसमें दूध भर दो देखो यह बिल्ली तुमको चाहती है तुम्हे देखते ही बाहर आ जाती है। अब उनसे कौन कहे कि बेगम साहिबा बिल्ली हमें चाहती है या हमारे दूध को और दूसरी बात यह कि कटोरी नही कटोरा है और अगर इसी तरह से कटोरे में दूध भरते रहे तो एक दिन ज़रूर कटोरा थामने की नौबत आ जायेगी।

एक दादा सिफ़त साहब और हैं हर वक़्त हेकड़ी जमाये रहते हैं दूध वाले अगर तुम पानी मिलाने से बाज़ नहीं आये तो जेल करा दूँगा तुम्हें मालूम नही कि चौराहे वाले थाने का दारोगा हमारा क्लास फेलो था दूध वाले हमारा भांजा दूध की जाँच का इन्सपेक्टर है किसी दिन भी तुम्हारे दूध का नमूना ले जायेगा और जाँच करके बता देगा कि कितना पानी मिला हुआ है और कितना सिंघाड़े का आटा। तुम्हें शर्तिया जेल हो जायेगी अब उन्हें कौन बताये कि ख़्वाहमख़्वाह जेल हो जायेगी उनका भांजा हर महीने हर एक दूध वाले से दस दस रुपया किस बात के ले जाता है।

बड़े बड़े चाय पीने वाले से तो मैं और परेशान रहता हूँ। अक्सर शिकायत करते रहते हैं कि दूध वाले चलो पानी मिलाते हो कोई बात नहीं लेकिन दूध में और क्या क्या चीज़ें मिलाते हो चाय का अजब मज़ह है यह लोग बिला वजह दूध वाले के पीछे पड़े रहते हैं क्या चाय की पत्ती गड़बड़ नहीं हो सकती है।

एब साहिबा हैं जब देखिये शिकायत करती रहती हैं कि दूध अच्छा नहीं है इसमें बालाई की तह नहीं जमती यह नहीं देखती हैं कि उनकी शरीफ़ औलाद बालाई को कब छोड़ती होगी जो इन साहिबा को मौक़ा मिल सके कि बालाई की तह उतारा करें।

एक दुबले पतले साहब हैं सींक सलाई फूँक मारो उड़ जायें। सुनिये ज़रा उनकी बातें कहते क्या हैं देखो दूध वाले मैं सुबह तड़के उठ कर वरज़िश करता हूँ उसके फौरन बाद दूध पीता हूँ और तुम हो कि देर से दूध लाते हो एक बार मशवहर दिया कि रात में दूध लेकर रख लिया करें ताकि सुबह तड़के दूध पी सकें तो फरमाते हैं कि उन्हें सेहत का बहुत ख़्याल है और उन्हें ताज़ा ही दूध चाहिये वह रात का बासी दूध नहीं पी सकते उनकी समझ में यह बात नही आती कि मैं उन्हें इतनी सुबह दूध कैसे दे सकता हूँ कोई उनके पड़ोस में रहता हूँ दूसरे गाँव से आता हूँ वह भी दूधिया ट्रेन से बैठकर दूधिया ट्रेन तो आप समझ ही गये। वही ट्रेन जो सरकार ने दूध वालों की सहूलत के लिये अलीगढ़ से देहली तक चलायी लेकिन जनाब शरीफ़ लोग उस पर भी नहीं मानते और उस ट्रेन मे सफ़र करने से बाज़ नहीं आते और हद तो यह है कि वह सीट पर भी बैठ जाते हैं अब जनाब वह सीट पर बैठ जायेगे तो हम पैर फैला कर कैसे लेट सकेगे और बक़या सीटों पर दूध के डिब्बे कैसे रख सकेंगे अब अगर हम उन्हें हाथ से घसीट कर उठा दें या उनकी टाँग पर अपना दूध का डिब्बा पटख़ दें तो दुनिया भर में बदनाम करते फिरते हैं कि दूध वाले बड़े बत्तमीज़ होते हैं दूधिया ट्रेन में नज़र ही आ जाता है।

अब आप ही बताइये कि आख़िर कहाँ तक हम बेचारे दूध वाले लोगों को घसीट घसीट कर सीट से उतारते रहें आख़िर हम लोग भी इन्सान हैं क्या हम लोगों के हाथ नहीं थक सकते।

एक बार का वाक़ेआ है एक मोहल्ले में हम दूध देने जाते थे वहाँ एक मशहूर गुन्ड़ा भी रहता था उस पर कई क़त्ल के मुक़दमें भी चल रहे थे सब ही लोग उससे परेशान रहते थे। कई बार तो वह मुझसे ज़बरदस्ती दूध लेकर पी गया एक दिन क्या देखता हूँ वह हमारी दूधिया ट्रेन में बैठा हुआ है मैं तो आप को साफ़ साफ़ बताऊँ कि मैं उसको देख कर डर गया और उस तरफ़ गया ही नहीं जिधर वह बैठा था लेकिन थोड़ी देर बाद क्या देखते हैं कि तडापड–तड़ापड़ की आवाज़ें आ रही हैं झाँक कर देखा तो पता चला कि मेरे ही चेले चापड़ उसकी पिटाई लगा रहे हैं। पता चला कि उसे सीट पर से उठने का हुक्म दिया गया था और वह उठा रहा और

उसके बाद वह सारे रास्ते खड़ा रहा। वैसे मैं अब आप को बताऊँ कि मैंने अब इसके मोहल्ले में दूध देना छोड़ दिया है माफ़ कीजियेगा मैं कुछ और कह रहा था बात कहाँ से कहाँ पहुँच गयी बात उस सींक सलाई की हो रही थी जो सुबह कसरत करने के बाद ताज़ा दूध पीते थे अब आप ही बताइये कि सफ़र की उन दिक़्क़तों के बाद भला कोई इतनी सुबह किस के घर दूध देने के लिये जा सकता है।

अजी जनाब अक्सर मैं लोगों के मज़ाक़ का इतना नाश्ता बनता हूँ कि कभी कभी सोचता हूँ कि मज़ाक़ को तो रखूँ ताक पर और बुरा मान जाऊँ एक बार एक बेगम साहिबा बोली देखो दूध वाले कल से दूध एक किलो के बजाये दो किलो आयेगा अब कल से हम पप्पू को भैंस का ही दूध पिलायेंगे तो सुनिये साहब–अन्दर से उनके शौहर साहब क्या आवाज़ लगाते हैं अरे बिला वजह बढ़ा रही हैं क्या फ़ायदा होगा यह इतना ही पानी मिला देगा गुस्सा तो बहुत आया लेकिन क्या करता मुस्कुरा कर चुप रहा चलिये मान लिया पानी मिलाते हैं लेकिन अब इतना भी नहीं एक तो हम दूध वालों की मुस्तऐदी का यह हाल है कि दूध का नागा नहीं करते चाहे आँधी तूफ़ान आये तब भी।

एक दिन बड़ी ज़ोर शोर की बारिश हो रही थी और उसमें भी एक घर में दूध देने पहुँचा तो उनका लड़का क्या कहता है अरे दूध वाले तुम बहुत सीधे हो इतनी तेज़ बारिश हो रही है इसमें भी तुम अपने दूध के डिब्बे बन्द किये हुये हो अरे ऐसे में तो डिब्बा खुला रखते हैं मुझे बड़ा बुरा लगा अब मैं इतना सीधा भी नहीं दूध का डिब्बा बारिश में बन्द करना मैं आम तौर से भूल जाता हूँ। हाँ जब मैं उनके घर का फ़ाटक खोल कर दाख़िल हो रहा था तो मुझे याद आ गया था कि दूध का डिब्बा खुला है ज़ाहिर है फिर खुला थोड़े ही रहता और वह साहब हैं ज़बरदस्ती सीधा समझने पर मिस्र हैं अजी जनाब आज के ज़माने में लोग कुछ समझ लें बस सीधा न समझें।

कहीं ऐसा तो नहीं है कि आप लोग मेरी दास्तान पढ़ते पढ़ते बोर हो रहे हों और कह रहे हों कि यह दूध वाला तो शिकायतों का दफ़्तर खोल कर बैठ गया। नहीं हम अपने ग्राहकों को अपना दुश्मन तो समझते नहीं कि हम एक वक़ील की तरह उनकी हर एक बात को ग़लत साबित करने की कोशिश करें ऐसा नहीं है उन लोगों की एक शिकायत से मैं पूरा मुत्तफिक़ हूँ वह यह कि मैं दूध अक्सर देर से देता हूँ मतलब यह कि किसी घर मैं दूध देने पहुँचा तो पता चला कि साहब बग़ैर चाय के दफ़्तर चले गये और बच्चे बग़ैर दूध पिये स्कूल चले गये। अब जब मैं देर में दूध देने कि वजह बताऊँ तो फिर यही हज़रात ज़िम्मेदार साबित होंगे लेकिन जो बात है वह कही जायेगी अब वजह सुनिये एक घर में पहुँचा दूध देने आवाज़ लगायी दूध ले लो अन्दर से क्या मुतालिक़ आवाज़े आ रही हैं। ज़रा ग़ौर से सुनिये अरे गुड्डू बाहर दूध वाला इतनी देर से खड़ा है ज़रा दूध ले लो मैं शेव कर रहा हूँ पप्पी से कहिये वह दूध लेले मैं दूध नहीं ले सकती स्त्री कर रही हूँ मुझे स्कूल की देर हो रही है।

अरे ज़रा आप ही क्यों नहीं दूध ले लेते हैं कौन सा काम कर रहे हैं अख़बार ही तो पढ़ रहे हैं गैस ख़त्म हो गयी। कमबख़्त स्टोव जल नहीं रहा है मैं क्या क्या करूँ एक दूध भी कोई नहीं ले सकता किसी दिन बीमार पड़ गयी तो पता चलेगा सबको–काम कैसे होता है एक से एक काहिल जमा हो गये हैं इस घर में हिल कर कोई काम ही नहीं करना चाहता है।

अरे बाबा चिल्ला क्यों रही हो एक अख़बार पढ़ना मुसीबत कर दिया है। अरे गुड्डू उल्लू के पट्ठे दूध क्या नही लेता है जी ले तो रहा हूँ। अब साहब गुड्डू पतीली लिये दनदनाते चले आ रहे हैं और बड़बड़ा मुझ पर रहे हैं कि आ जाते हैं सुबह–सुबह जैसे कि मैं सुबह–सुबह दूध नहीं देने बल्कि भीक माँगने आ गया हूँ।

अब साहब इतनी देर खड़ा रहने के बाद जब मैं दूसरे घर दूध देने पहुँचा और आवाज़ लगायी दूध ले लो अन्दर से बेगम साहिबा की चिल्लाने की आवाज़ आयी अरे शरबती तूने अब तक दूध की पतीली नही माँझी देखो दूध वाला आ गया। तो शरबती क्या बोली माँझ तो रही हूँ बेगम साहिबा यह दूध वाला हर दम हवा के घोड़े पर सवार रहता है। अजी जनाब शरबती पूरे पन्द्रह मिनट के बाद पतीली लेकर नमुदार हुई।

अब आप से क्या छुपाएँ साहब कि शरबती को देखकर वैसे ही गुस्सा एक दम ठंडा पड़ जाता है वरना

कोई और होता तो दो चार सुनाता ही उसे अब आप ही फैसला कीजिये जब लोग इतनी देर–देर में दूध लेने लगेंगे तो फिर बाक़ी घरों में लामोहाला देर में दूध पहुँचेगा अब आप ठंडे दिल से ग़ौर फरमाएँ इसमें मेरा कितना कुसूर है चलिये शिकायतों का दफ़्तर अब ख़त्म आप लोग एक–एक प्याली चाय ही पीलें गर्म दूध डाल कर।

.....☆.....